Certificate of Publication

This is Certify

Dr. Neha Kalyani

Contributed a Chapter

"राष्ट्रपिता महत्मा गाँधी के आर्थिक विचारो की वर्तमान युग मे प्रासंगिकता"

Chapter No. 12 , Pages From 68 to 76

ISBN Number

9 788194 736400

PUBLISHED BY

Dr. J. B. Anjane,
Publication Division,
S. V. P. Arts & Science College,
Ainpur, Tal-Raver Dist- Jalgaon, MS,
(INDIA) 425507

Publication ID: MG-05

Date of Publication: Nov. 2021

Published a chapter in Peer Review edited Book

"महात्मा गांधी : एक बहुआयामी व्यक्तिमत्व"

Editors, Dr. J. B. Anjane, Prof. V. N. Ramteke, Dr. S. S. Salunke

Dr. S. S. Salunke
Managing Editor

Prof. V. N. Ramteke
Guest Editor

Prin. Dr. J. B. Anjane
Chief Editor

The eBook is open Access, Freely available on http://ainpurcollege.org/PublicationDivision/Default.aspx

2021-22

महात्मा गांधी : एक बहुआयामी व्यक्तिमत्व

Sr.No	Chapter Title	Author
1	गांधीजी समजून घेताना !	प्रा. अक्षय रविंद्र महाजन
2	महात्मा गांधीचे राष्ट्रीय एकात्मता संदर्भातील विचार	डॉ.मिलिंदकुमार भिकाजी देवरे
3	महात्मा गांधीजींचे आर्थिक विचार	प्रा.देविदास भटू भामरे
4	राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी : प्रभावशाली व्यक्तिमत्व व गतिमान नेतृत्व	डॉ. महेश दिलीप औटी
5	२० व्या शतकातील महान विभूती : राष्ट्रपिता महात्मा गांधी	डॉ.दीपक सुभाषराव सूर्यवंशी
6	गांधीजींची पत्रकारिता	प्रा. डॉ. जगदीश घन:शाम खरात
7	गांधीवाद	प्रा. डॉ. जगदीश घन:शाम खरात
8	महात्मा गांधीजींचे सामाजिक कार्य	डॉ. देवयानी चव्हाण
9	महात्मा गांधींच्या शैक्षणिक विचारांचे ऐतिहासिक अध्ययन	डॉ. विलास भा. फरकाडे
10	महात्मा गांधीजींचे तत्त्व व कार्यपद्धती- एक अभ्यास	प्रा.प्रदीप नामदेव तायडे., प्राचार्य डॉ. जे. बी. अंजने
11	महात्मा गांधी : सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह एवं गांधी विचारों की प्रासंगिकता	प्रा॰ डॉ॰ संजय वामनराव भोळे
12	राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता	डॉ. नेहा कल्याणी
13	Social Work of Mahatma Gandhi	Dr.Priya Narendra Kurkure
14	Bapu Kuti (Sevagram Ashram) : Inspiration Place	Mahadev C. Chunche
15	Basic Education: The Gandhian Approach to Self Dependance and Self Awareness	Dr. B.J. Mundhe
16	Moral and Spiritual Education: The Gandhian View Points	Dr. B.J. Mundhe
17	FUNDAMENTAL CONCEPTS OF GANDHIJI AND ITS RELEVANCE IN CONTEMPORARY INDIAN SOCIETY	Prof Swati Sagar Kathaley
18	महात्मा गांधीजी का मिट्टी, पाणी का प्रयोग और इंडियन ओपिनियन मे पत्रकारिता यह एक मानासशास्त्रीय अध्ययन	प्रा व्ही.एन.रामटेके
19	गांधी दर्शन और आदर्श व्यक्तित्व	डॉ. जगदीश पी. तंकोदरा

महात्मा गांधी

एक बहुआयामी व्यक्तिमत्व

प्राचार्य डॉ. जे. बी. अंबने
प्रा. विनोद एस. रामटेके
डॉ. संदीप एस. साळुंके

महात्मा गांधी : एक बहुआयामी व्यक्तिमत्व

संपादक

प्राचार्य डॉ. जे. बी. अंजने
प्रा. व्ही. एन. रामटेके
प्रा. डॉ. एस. एस. साळुंके

महाविद्यालय प्रकाशन क्र. ०५

ISBN NO.978-81-947364-0-0

DDC Number : 923.254

प्रकाशक: डॉ. जे. बी. अंजने
प्राचार्य, स.व.प. कला व विज्ञान महाविद्यालय, ऐनपूर

प्रकाशन स्थळ: ऐनपूर ता. रावेर, जि. जळगाव, [महाराष्ट्र] पिन. ४२५५०७

मुखपृष्ठ: डॉ. संदीप एस. साळुंके

अक्षरजुळणी व मुद्रण: प्रकाशन विभाग, स.व.प. कला व विज्ञान महाविद्यालय, ऐनपूर

वर्ष : नोव्हेंबर, २०२१

मूल्य: विनामूल्य

© प्राचार्य, स.व.प. कला व विज्ञान महाविद्यालय, ऐनपूर
ईमेल: svpca123@yahoo.com, svpca.librarien@gmail.com
संकेतस्थळ: http://ainpurcollege.org/

- या ई-ग्रंथात प्रकाशित झालेल्या लेखांतील मते ही त्या त्या लेखकांची आहेत. त्यांच्याशी प्रकाशक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही.
- या कोणत्याही भागाचे पुनर्निर्मिती अथवा वापर, इलेक्ट्रॉनिक अथवा यांत्रिकी साधनांनी- फोटोकॉपिंग, रेकॉर्डिंग किंवा कोणत्याही प्रकारे माहिती साठवणुकीच्या तंत्रज्ञानातून प्रकाशकाच्या लेखी परवानगीशिवाय करता येणार नाही. सर्व हक्क राखून ठेवले आहेत.

12

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के आर्थिक विचारों की वर्तमान युग में प्रासंगिकता

लेखक - : डॉ. नेहा कल्याणी

सारांश

आज जब मानव 21 वी सदी की ओर बढ रहा है। ऐसे में गांधी जी का व्यक्तित्व दुनिया को नैतिकता, समता, प्रतिष्ठा न्याय के सपनों और आदर्शों से मंडित एक ऐसी व्यवस्था देने की संभावना बना हुआ है; जो एक बेहतरविश्व का दरवाजा खोलती है। गांधीजी ने सर्वधर्म समभाव का संतुलन साधा,पूंजीवाद और साम्यवादीदर्शन से अलग एक नयी आर्थिक व्यवस्था दी ।आज के युग को बाजार संचालित युग कहतेहैं।वर्तमान युग में नैतिक मूल्य, शुचिता, सामाजिक मर्यादा, स्नेह, अपनापन लुप्त होता जा रहा है ।बाजार ना ही इन मूल्यों को खरीद सकता है और ना ही इनकी नींव डाल सकता है। गांधीवादी अर्थशास्त्र एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था की संकल्पना पर आधारित है जिसमें "वर्ग" का कोई स्थान नहीं है. गाँधीजी का अर्थशास्त्र एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था स्थापित करने की बात करता है जिसमें एक व्यक्ति किसी दूसरे का शोषण नहीं करता है. अर्थात गांधीवादी अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय और समता के सिद्धांत पर आधारित है.

देश में ही नहीं , दुनिया में जहां भी मानवाधिकार की लड़ाई दिखती है,वहाँ धर्म, करुणा, और मानवता का संदेश देने वाले दिखाई देते है। गांधीजी द्वारा प्रस्तावित विषय- स्वच्छता, भेदभाव, सर्वधर्म समभाव, पर्यावरण, मितव्ययिता ये आज के समय के प्रासंगिक मुद्दे है। वास्तव में गांधी दर्शन मनुष्यता की सम्पूर्ण परियोजना है; गांधी जी आत्मनिर्भर गांवों का, ग्राम स्वराज्य का ,ट्रस्टीशिप का सपना देखते है, इस सपने के मूल में एक ही बात है - कम से कम साधनों और जरूरतों पर निर्भर जीवन।

गांधीजी उस मुनाफाखोर व्यवस्था के खिलाफ तनकर खड़े होते हैं, जिसमें किसी चीज का मूल्य उसकी लागत से अधिक रखना न्यायसंगत माना जाता है। चरम उपभोग की वासना को भुगतने के बाद, चरम तृप्ति के नशे के उतरने के बाद, जातिगत तनाव और साम्प्रदायिक टकराव के कई युद्ध हारने के बाद आज मानव

गांधी जी के आदर्शों को अपनाने का प्रयास कर रहा है। बुद्ध सत्य, अहिंसा और शांति के प्रतिष्ठाता थे तो गांधी जी उनके कर्मयोगी और संवाहक थे। गांधी जी ने सन्यास को नया आयाम दिया छोड़े, काटे समेटे बगैर भी सन्यास सम्भव है।

थोरू , टालस्टाय और क्रापोटिकन के विचारों से गाँधी जी प्रभावित थे। टालस्टाय की सरलता , वैराग्य और समानतावाद का सिद्धांत , गाँधी जी के दर्शन का भाग बन गया। किन्तु गाँधीजी के अधिक विचार काफी हद तक जॉनरस्किन की किताब "Unto This Last" से प्रभावित थे. यह किताब १८६० में प्रकाशित हुई थी. उन्होंने इस किताब से सीखा कि-

१. व्यक्ति के लिए अच्छा, सभी के लिए अच्छा है।

२. समाज में सभी के श्रम का मूल्य बराबर है. चाहे वो वकील हो या नाई।

३. श्रम और पूंजी के बीच किसी प्रकार का विरोध नहीं है.

४. गांधी जी मानते थे कि कोई व्यक्ति चाहे कितना भी अमीर क्यों न हो उसे इतना शारीरिक परिश्रम अवश्य करना कि वह अपना पेट भर सके. अर्थात मानसिक श्रम करने वाले को भी शारीरिक श्रम करना चाहिए.

५. उनका न्यासवाद का सिद्धांत (Principle of Trusteeship) यह कहता है कि पूंजी का असली मालिक एक पूंजीपति नहीं है बल्कि पूरा समाज है. पूंजीपति केवल संपत्ति का रखवाला है. उनका मानना था कि जो संपत्ति पूँजीपतियों के पास है वह पूरे समाज की धरोहर है.

६. गाँधी जी का अर्थशास्त्र छोटे और श्रम प्रधान उद्योगों के पक्ष में है. गाँधी जी बड़ी-बड़ी मशीनों के विरोधी थे; हालाँकि यह बात वर्तमान समय में थोड़ी कम सार्थक है. उनका मानना था कि एक निर्जीव मशीन कई मनुष्यों का काम करती है, जिसके कारण समाज में बेरोजगारी बढ़ती है.

७. गाँधी जी मानते थे कि यदि व्यक्ति को कम संसाधनों के साथ रहने की आदत पड़ जाये तो व्यक्ति की जिंदगी में कभी भी कुछ कम नहीं पड़ता है'. वे मानते थे कि आवश्यकताएं मृग तृष्णा जैसी होतीं हैं और आवश्यकताओं को जितना बढ़ाया जाए उतनी ही बढ़ती जातीं हैं.

८. उत्पादन का लक्ष्य समाज की आवश्यकता की पूर्ती होना चाहिए ना कि लाभ कमाना.

९. गाँधी जी पूँजीपति को पूर्णतया नष्ट नहीं करना चाहते थे बल्कि वे उसे समाज के लिए उपयोगी बनाना चाहते थे.

१०. गाँधी जी कहते थे कि प्रत्येक पूँजी दोषी नहीं है, पूँजी का गलत उपयोग पूँजी को गलत बनाता है. आवश्यकता से अधिक पूँजी रखने वाला समाज का दुश्मन है.

११. गाँधी की आर्थिक व्यवस्था में उत्पादन की मात्रा समाज की जरुरत के हिसाब से तय होती है. इसमें व्यक्तिगत इच्छाओं और लालच का कोई स्थान नहीं होता है.

१२. प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आवश्यकताओं की पूर्ती के लिए ही उत्पादन करना चाहिए. आवश्यकता से अधिक वस्तुओं का उत्पादन प्रकृति पर अतिरिक्त दबाव डालता है.

१३. गाँधी जी राष्ट्रीयकरण के विरोधी थे. उनका मानना था कि राष्ट्रीयकरण से राज्य की निरंकुशता बढती है.

१४. गाँधी जी उचित उद्देश्यों के लिए की गयी हड़ताल को नहीं मानते थे. वे स्वार्थपूर्ण और हिंसात्मक हड़ताल के विरोधी थे.

उपरोक्त बिन्दुओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि गाँधी जी के अर्थशास्त्र में "व्यक्ति" केन्द्रीय स्थान रखता है. उनका मुझाव था कि समाज के हर अंग को लोगों के कल्याण में वृद्धि के लिए ही कार्य करना चाहिए. गाँधी जी के विचारों को समझना आसान नहीं, विशेषतः अगर बात उनके अर्थशास्त्र की हो तो। इसका मुख्य कारण यह है कि गाँधी अपनी नैतिक समझ के कारण अपने निष्कर्षों तक पहुँचे, न कि विकास, निवेश, माँग या पूर्ति जैसे आर्थिक सिद्धांतों के आधार पर नहीं , किन्तु उनके आर्थिक विचार स्वतः ही आर्थिक सिद्धांतों के मापदंडों पर सार्थक प्रतीत होते है। यही वजह है कि उनके अर्थशास्त्र के विचारों को वामपंथी-दक्षिणपंथी-मध्यमार्गी या कम्युनिस्ट-समाजवादी-पूँजीवादी विचारधाराओं में रख पाना सम्भव नहीं है।

इसलिए गाँधी के विचारों पर व्यापक विषयवस्तु के संदर्भ में चर्चा करके, वर्तमान वास्तविकताओं की कसौटी पर उनका परीक्षण करके ही यह पता लगाया जा सकता है कि गाँधी के व्यावसायिक समाधानों में दूरदर्शिता है या तर्कहीनता। गाँधी स्वदेशी में, ग्रामीण आत्मनिर्भरता में, बड़े उद्योगों के बजाय कुटीर और छोटे उद्योगों में और उत्पादन में मशीनों की अपेक्षा श्रम के इस्तेमाल में विश्वास रखते थे।

गाँधी जी के आर्थिक विचारों की तीन अवस्थाये –

नकारात्मक अवस्था (१९१९) - इस काल में उन्होंने आर्थिक विकास की पश्चिमी पद्धति की आलोचना कर एक गैर भौतिकतावाद दृष्टिकोण अपनाया , जो उनकी पुस्तक हिन्द स्वराज में विवेचित है।

सकारात्मक अवस्था - (१९१९ - १९३४) : इस अवस्था के दौरान उन्होंने स्वदेशी आदर्श के रूप में पश्चिमी सभ्यता का विकल्प प्रस्तुत किया।

निर्माणकारी अवस्था - (१९३४ - १९४८) : इस अवस्था में गाँधी जी अधिक व्यवहारिक हो गए। उन्होंने ग्रामीण पुनर्जीवन के लिए निर्माणकारी कार्यक्रम दिया और सर्वोदय का आदर्श रखा।

गाँधीजी के आर्थिक विचार :-

गाँधी जी के अनुसार - सभी धन की अंतिम परिपूर्ति पूर्ण उदारता , चमकीली आँखे , खुशहाल मानव जाति को जहाँ तक सम्भव हो सके उत्पन्न करना है। उनके अनुसार कोई भी देश तभी धनवान होगा जब उस देश में अधिकांश संख्या में खुशहाल व्यक्तियों का पोषण करता है। परिणामतः उनके आर्थिक विचारो में धन की अपेक्षा खुशहाल मानव की महत्ता है। अर्थशास्त्र का उद्देश्य समाज की भौतिक और नैतिक प्रगति होना चाहिए। उन्होंने मानव मूल्यों पर बल देते हुए मानवीय संबंधो के भौतिक आधार की निंदा की।गाँधी जी के अनुसार आर्थिक नियम, जिनका उद्देश्य भौतिक प्रगति के साथ सामाजिक एकता और उन्नति करना है,वे प्रकृति के नियमो के अनुसार निर्मित होना चाहिए। प्रकृति और अर्थशास्त्र के नियमो में परस्पर कोई विरोध नहीं होना चाहिए। चूंकि गांधीजी अहिंसा के सिद्धांत के उपासक थे अतः उनके आर्थिक विचार अहिंसा का अर्थशास्त्र कहलाते है। उन्होंने अहिंसात्मक व्यवसाय को परिभाषित करते हुवे कहा है की- " जो मूलभूत रूप से हिंसा से स्वतंत्र है और जिसमे शोषण या अन्य के प्रति द्वेष सम्मिलित नहीं है। भारत की आधारभूत समस्याओ का समाधान अहिंसा के प्रयोग में निहित है। गाँधी जी ने पूंजीवाद का विरोध किया क्योंकि यह मानवीय श्रम के शोषण का परिणाम है। उनका विश्वास था कि प्रकृति लोगो की आवश्यकता को संतुष्ट करने के लिए पर्याप्त उत्पन्न करती है ; अगर प्रत्येक अपनी आवश्यकता के अनुरूप लेगा तो गरीबी तथा भुखमरी नहीं होगी।"

यदि आप नैतिकता को गाँधी के विचारो से अलग कर दें तो आप उनके अर्थशास्त्र को नहीं समझ सकते। क्योंकि उनके आर्थिक विचार नैतिकता से गहनता से संबद्ध है। लेकिन चूंकि नैतिकता पर बहस मकसद नहीं है, तो हमें उनके विचारों को उनकी आर्थिक मूल्यों के लिए परखना होगा, ताकि पता चल सके कि उनके

कौन से आर्थिक विचार आज भी प्रासंगिक हैं, कौन से विचार असफल हैं और कौन से भविष्य में सही साबित हो सकते हैं।

आइए, एक मुख्य गाँधीवादी विचार से आरम्भ करें-'स्वदेशी'। विशुद्ध आर्थिक शब्दकोश में देखें तो स्वदेशी का विचार आज के संरक्षणवादी विचारधारा से बहुत अलग नहीं है। ऐसा लगता है कि गाँधी भी यही सुझाव दे रहे हैं, उन्होंने अपने एक निबंध में लिखा, "भारत को अपने प्राथमिक उद्योगों की वैसे ही रक्षा करनी चाहिए, जैसे कि एक माँ पूरी दुनिया के खिलाफ़ अपने बच्चों की रक्षा करती है ...। "एक अन्य अवसर पर उन्होंने लिखा, "बड़ी मात्रा में जनता की गरीबी आर्थिक और औद्योगिक परिक्षेत्र से स्वदेशी के बाहर हो जाने की वजह से है। अगर व्यापार में भारत के बाहर से एक भी सामान न लाया जाय, तो वो आज दूध और शहद से भरी हुई भूमि होगी।"

गाँधी का स्वदेशी अंतर्मुखी नहीं था, इसका मुख्य उद्देश्य विदेशी आयात को बाहर रखने से कहीं अधिक आत्मनिर्भरता और स्वतंत्रता को बढ़ावा देना था। "जहाँ कपास उगाने से लेकर सूत कातने तक के सभी कार्य एक ही गाँव या कस्बे में किये जाते हों, वही सच्चा स्वदेशी है।" ये विचार उनके उस विचार से जुड़ा था जहाँ उनका मानना था कि गावों को गणतंत्र बनाने और उनके लोकतांत्रिक शासन के लिए उनका आत्मनिर्भर होना आवश्यक है, ताकि गाँव के लोग अपने ज़रूरत की समस्त चीज़ें गाँव में पैदा कर सकें। "ग्राम्य स्वराज्य से तात्पर्य एक ऐसे गाँव से है जो पूर्ण गणतंत्र हो और अपनी महत्वपूर्ण आवश्यकताओं के लिए अपने पड़ोसी से स्वतंत्र है। इसलिए सभी गाँवों की पहली चिंता अपने खाने के लिए फ़सलों और कपड़े के लिए कपास का उत्पादन होना चाहिए। पशुओं के लिए चारागाह और वयस्कों और बच्चों के लिए खेल का मैदान छोड़ने के बाद यदि अतिरिक्त ज़मीन बचती है तो गाँजा, तम्बाकू, अफीम को छोड़कर अन्य व्यापारिक फ़सलों के लिए उसका उपयोग किया जा सकता है।"

गाँधी का ग्राम गणतंत्र उनके उत्तराधिकारी नेहरू की कल्पना के बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण के विचार की विरोधी स्थिति में था। अम्बेडकर के विपरीत, जो कि गाँवों को कट्टरता और भ्रष्टाचार का केंद्र मानते थे, गाँधी भारत का भविष्य, यहाँ के गाँवों में देखते थे, और बड़े उद्योगों को ग्राम्य गणतंत्र और छोटे उद्योगों के लिए खतरनाक मानते थे। उन्होंने लिखा, "मैं कहूँगा कि अगर गाँव बर्बाद होते हैं, तो भारत भी नष्ट हो जायेगा। भारत किसी भी मायने में भारत नहीं रहेगा। दुनिया में उसका अपना मकसद खो जायेगा।

गाँवों का पुनरुत्थान तभी सम्भव है जबकि गाँवों का शोषण बंद हो। बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण, बाज़ार और प्रतिस्पर्धा लाएँगे और यह अनिवार्य रूप से ग्रामीणों के निष्क्रिय या सक्रिय शोषण का कारण बनेगा। इसलिए हमें गाँवों के आत्मनिर्भर होने पर केंद्रित होना होगा, जिनके लिए उत्पादन का मुख्य उद्देश्य अपने लिये प्रयोग करना हो।"

कुटीर उद्योगों को लेकर गाँधी के त्रुटिपूर्ण विचारों और बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन को बुरा मानने के चलते भारत ने तीव्र औद्योगिक विकास की लगभग सारी राहें खुद ही बंद कर दी थीं। हमने छोटे उद्योगों की रक्षा करने के कारण उन्हें बड़े पैमाने पर बढ़ने या लाभकारी होने से रोका। सन् 1991 के विनियंत्रण के हमें सही राह तक पहुँचाने से पहले तक हमने उद्योगों को छोटा रखने और आयात प्रतिस्थापन पर ही ध्यान दिया।

पारम्परिक रूप से एक-दूसरे पर आश्रित विश्व में खुद ही उत्पादन करने वाले गाँवों का विचार सराहनीय है।वर्तमान युग के समय में जब कि दुनिया में इंटरनेट और भूमंडलीकरण के बाद विकास का रास्ता सेवाओं पर निर्भर है, तब भी उत्पादन और कृषि के सम्बन्धी गाँधी जी के इन विचारों का महत्व है।

भले ही वर्तमान समय में हम शहरीकरण की प्रवृत्ति को विकास के लिए उत्तम मानते है , किन्तु फिर भी स्मार्ट गाँव के बिना स्मार्ट सिटी और विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। स्वचालन, वैश्वीकरण और स्थानीयकरण की नई दुनिया में, जहाँ औपचारिक क्षेत्र की नौकरियाँ कम होती जायेंगी, हमारा भविष्य, अपने स्वयं के कौशल निर्माण, स्वरोजगार, और आत्म-उन्नति पर ही तो निर्भर है- और गाँधी यही तो चाहते थे। स्व-रोजगार, जहाँ भविष्य में सरकार और उद्योग सहायक भूमिका में होंगे। इस नई साहसी दुनिया में गैरलाभकारी संगठन बड़ी भूमिका में होंगे।

दूसरा गाँधी जी के विचारों का झुकाव स्वचालन और मशीनरी के प्रति उनकी घृणा से सम्बन्धित है। उन्होंने शारीरिक श्रम को उच्चकोटि का माना और चरखे को अपनाकर इसकी प्रशंसा भी की। भले ही हम ऐसे युग में है जब हम पूरी तरह मशीनों पर निर्भर है फिर भी गाँधी जी का मानना था मशीनें इंसान के लिए होनी चाहिए न कि इंसान मशीनों के लिए।हमें मशीनों पर इतना निर्भर नहीं होना चाहिए की मशीन के अभाव में हम नि सहाय हो जायें। गाँधी उच्च तकनीक की अपेक्षा कम-से-कम तकनीक में विश्वास करते थे। मशीन और स्वचालन पर उनके विचार थे, "मेरी मशीन सबसे आरम्भिक प्रकार की होनी चाहिए, जिसे मैं लाखों लोगों के घर में रख सकूँ।" "मैं मशीनों के सार्वत्रिक होने पर रोऊँगा नहीं, या इसे कोई विपत्ति नहीं मानूँगा।"

गहराई में जायें तो पता चलता है कि गाँधी का मुख्य विरोध मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण किये जाने से था और यहीं से उनकी मशीनों और स्वचालन पर आपत्ति की शुरुआत होती है। इसलिए, जहाँ उनका मानना था, "पूँजी कुछ लोगों के श्रम का शोषण कर खुद को कई गुना बढ़ाती है," तो उन्होंने समान रूप से यह भी देखा कि अगर स्वनियंत्रित न हो, तो संगठित श्रम भी एक बड़ा खतरा बन जायेगा।

गाँधी ने स्वयं कहा था, "हमले, काम रोकना और हड़तालें अद्भुत बातें हैं, इसमें कोई संदेह नहीं है, लेकिन इनका दुरुपयोग करना मुश्किल नहीं है।" वास्तव में, वह हड़ताल से मजबूर करके नियोक्ताओं से रियायतें पाने से घृणा करते थे। सम्भवतः, जो सबसे महत्त्वपूर्ण विचार महात्मा गाँधी ने हमें दिया, जिसने हमारे समय में पूँजीवाद (2008) और समाजवाद (1989) की विफलताओं के समय में भी उन्हें पूर्णतयः निष्कलंक रखा, वो था – ट्रस्टीशिप का उनका विचार। ट्रस्टीशिप से, गाँधी का मतलब था था कि व्यापारियों को अपने उद्यमों को लाभ के लिए चलाना चाहिए, लेकिन इससे कमाया गया धन व्यक्तिगत उपयोग के लिए नहीं बल्कि समाज के सभी वर्गों के लाभ के लिए किया जाना चाहिए। यह विचार टाटा ने स्वीकार किया था, जिन्होंने अपने सभी शेयरधारकों को ट्रस्ट में रखा था ताकि विकास के लिए जरूरी मुनाफे के अलावा बाकी धन समाज को वापिस किया जा सके।

गाँधीजी ने इस संदर्भ में लिखा, "यदि मेरे पास एक उचित मात्रा में धन विरासत या व्यापार के जरिये आया है तो मुझे ये पता होना चाहिए कि जो मेरे पास है वह सारा धन मेरे अपने इस्तेमाल के लिए नहीं है, जो मेरे पास है वह मेरी सम्माननीय आजीविका का अधिकार है, जोकि अन्य लाखों लोगों को मिले अधिकार से किसी भी प्रकार बेहतर नहीं है। उस धन के शेष भाग पर समुदाय का अधिकार है, और समाज के कल्याण के लिए ही इस्तेमाल होना चाहिए।"

गाँधी जी स्पष्टतया सम्पत्ति निर्माण के खिलाफ नहीं थे, लेकिन वो सिर्फ निजी लाभ के लिए सम्पत्ति के असीमित इस्तेमाल के खिलाफ थे।

ा जी के आर्थिक विचारों की प्रासंगकिता :-

ट्रस्टीशिप का विचार, पश्चिम में प्रचलन मे आ रहा है। अमेरिका के धनी उद्योगपतियों में इधर एक ब लेने का चलन बढ़ा है जिसे 'द गिविंग प्लेज' कहते है। इसके तहत वो अपनी आधी से भी ज्यादा सम्पत्ति ार्थ दे देते है। प्रतिष्ठित निवेशक, वारेन बफिट ने, बिल गेट्स व कुछ अन्य अरबपतियों के साथ, कुछ वर्ष ले ये कार्यक्रम आरम्भ किया।

आज १५० से भी अधिक अरबपतियों ने अपनी आधी से अधिक सम्पत्ति दान करने की प्रतिज्ञा कर चुके है, जिनमें मार्क जकरबर्ग, विनोद खोसला, एलॉन मस्क, लैरी एलिसन और डेविड रॉकफेलर शामिल है। यहाँ भारत में, हमारे आई.टी. अरबपतियों, नारायणमूर्ति, अजीम प्रेमजी, और शिव नाडर परोपकार के लिए करोड़ों खर्च कर रहे हैं।

गाँधी के मूल विचार-स्वदेशी, ग्राम्य गणतंत्र, कुटीर उद्योग, स्व-रोजगार, श्रम की गरिमा, और धन की ट्रस्टीशिप-आज की डिजिटल दुनिया के काम के नहीं है, लेकिन कहीं न कहीं उनके नैतिक सिद्धांत वैसे ही बदलाव लाये है, जैसी कि उन्होंने इच्छा की थी।

जीवन के खोये हुए रंगों को फिर से सराहने-जीने के लिए हमें उस गाँधी को समझने की कोशिश करनी होगी, जिसने इस पुख्ता से हमें परिचय कराया। आज जब हम नैतिकता को बीते हुए युग की एक बेकार वस्तु मानने लगे है; सत्य और आनन्द हमारे लिए शब्द मात्र बनते जा रहे है और हम स्वयं को अंधेरे में जीने के लिए शापित समझने लगे हैऐसे में गांधी दर्शन दीपक बनकर राह दिखाता हैउन्होंने अपमान और दमन से उबरकर विश्व मानवता की विडम्बना को समझना सिखाया। गांधी दर्शन हमारे अनेक अनुत्तरित प्रश्नों के समाधान प्रस्तुत करता है।

निष्कर्ष :-

महात्मा गाँधी यद्यपि अर्थशास्त्री नहीं थे किन्तु उनके सत्य और अहिंसा के दर्शन की संगति के साथ ही उनके आर्थिक विचारो की एक श्रृखला थी। गाँधी जी के अनुयायी जे. सी. कुमारप्पा ने उनके आर्थिक विचारो का शोधन और पुनर्व्याख्या करते हुए बताया कि शांति पूर्ण और स्थिर भविष्य के लिए यह अधिक उपयुक्त है। गाँधी जी का अर्थशास्त्र पारम्परिक अर्थशास्त्र से भिन्न है। गाँधी जी ने भले ही अर्थशास्त्र का क्रमिक अध्ययन नहीं किया फिर भी उनके विचार तार्किक है। उनके विचारो मे लोकहित, रक्षा , मौद्रिक प्रबंधन ,

अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की समस्या और आर्थिक आयोजन जैसे विषयो पर सामंजस्य की कमी है; तथापि उनके अर्थशास्त्र में एक मूलभूत मान्यता है की सभी देश अहिंसा के सिद्धांत पर संगठित होंगे। उन्होंने सम्पति के निजी स्वामित्व को स्वीकारते हुए पूंजीपतियों को लोक सम्पति का न्यासी बनने को कहा। उन्होंने पूंजीपतियों को पक्षपात हीन होकर कामगारो के कल्याण का समर्थन करने को कहा। परम्परावादी अर्थशास्त्री गाँधी जी के केवल दो विचारो से सहमत है - १. ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कुटीर उद्योगों का महत्व और २. आर्थिक संरचना के विकेन्द्रीकरण की आवश्यकता। अधिकांश अर्थशास्त्री गाँधी जी के इस विचार से सहमत है कि ग्रामीण सुधार और कृषि की पुनः स्थापना इस देश मे किसी भी आर्थिक सुधार के लिए अवश्य ही उत्कृष्ट प्रयास है।

संदर्भ ग्रंथ –

१. आर्थिक विचारो का इतिहास – एम. एल. सिंगल , एम. गिरिजा , एल. शशिकला वृन्दा पब्लिकेशन , दिल्ली
२. गांधी विचार यात्रा , राम नारायण उपाध्याय (२०१५). भारतीय प्रकाशन संस्थान , नई दिल्ली .
३. महात्मा गांधी जी का आर्थिक दर्शन , दुधनाथ चतुर्वेदी
४. गांधी दर्शन (विविध आयाम)" अलका अग्रवाल एव शिखा अग्रवाल (२०१५). पोइन्टर , पब्लिशर्स , जयपुर .
५. आर्थिकी, आर्थिक शोध पत्रिका, वाराणसी, वर्ष-४४, अंक-१, जून, २०१२
६. हिन्द स्वराज , महात्मा गांधी , सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट वाराणसी